ली क्वान यू: एशिया के 'सिंगापुत्र'

*डॉ. राहुल मिश्र**

आधुनिक सिंगापुर के संस्थापक और इसके पहले प्रधान मंत्री श्री ली क्वान यू ने मार्च, 2015 में सिंगापुर सार्वजनिक अस्पताल में अपनी अंतिम सांसें लीं। इक्यानवे वर्षीय श्री यू की मौत निमोनिया के कारण एक महीने से अधिक समय तक (5 फरवरी, 2015 से) अस्पताल में रहने के बाद हुई। श्री ली का जन्म औपनिवेशिक सिंगापुर में एक *बाबा* परिवार में वर्ष 1923 में हुआ था। यह उल्लेखनीय है कि *बाबा* औपनिवेशिक ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा रहे मेलाका, पेनांग और सिंगापुर की जलडमरूमध्य बस्तियों में बसे अंग्रेजी/मलय बोलने वाले चीनी जाति के समुदाय हैं।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के छात्र रह चुके श्री ली क्वान यू को सिंगापुर के राष्ट्रपिता होने का गौरव सही मायने में दिया गया है, क्योंकि उनके ही निर्णायक नेतृत्व में सिंगापुर ने अपने आप को एक सूने तीसरी दुनिया के बंदरगाह से बदलकर एशियाई समुद्री वाणिज्यिक तथा आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र के रूप में स्थापित कर लिया। उदाहरण के लिए, जब ली ने वर्ष 1959 में प्रधान मंत्री कार्यालय का कार्यभार संभाला था, तब सिंगापुर का वार्षिक प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 400 अमरीकी डॉलर (मात्र) था और जब उन्होंने वर्ष 1990 में पदत्याग किया तब यह 12,000 अमरीकी डॉलर के आंकड़े को पार कर चुका था। सिंगापुरी अर्थव्यवस्था की ताक़त ऐसी थी कि इसने एशियाई वित्तीय संकट के दौरान अटकलों को खारिज किया और वर्ष 1999 में इसका प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 22,000 अमरीकी डॉलर के नए बेंचमार्क/मानक तक पहुंच गया।

पीपुल्स ऐक्शन पार्टी (पीएपी), जिसकी स्थापना इन्होंने वर्ष 1954 में की थी, (तथा जो) सिंगापुर की प्रमुख राजनीतिक पार्टी है, (वह) सिंगापुरी राजनीतिक प्रणाली में एक प्रमुख किरदार बनकर उभरी। सिंगापुर के प्रधान मंत्री का कार्यभार संभालने के बाद श्री ली ने यह सुनिश्चित करने के लिए भरपूर प्रयत्न किया कि स्वतंत्र सिंगापुर, विशेषकर व्यापार तथा वाणिज्य के क्षेत्र में, मलेशिया पर अत्यधिक निर्भर रहने की बजाए आत्मनिर्भर बने। इस प्रकार, इन्होंने सिंगापुर को आधुनिक एशिया का विनिर्माण केन्द्र बना दिया।

श्री ली को दयनीय बुनियादी ढांचे और आवास सुविधाओं की समस्याओं में जकड़ा एक गरीब सिंगापुर विरासत में मिला था। सिंगापुर को एक आधुनिक शहरी राष्ट्र में बदलने की उनकी प्रतिबद्धता झुग्गी-झोपड़ों को आधुनिक आवासीय सुविधाओं में बदलने के लिए वर्ष 1960 में सिंगापुर आवास तथा विकास बोर्ड की स्थापना करने के लिए गए उनके निर्णय से भी अत्यंत स्पष्ट है।

इसी प्रकार, वर्ष 1968 में सिंगापुर विकास बैंक (डीबीएस) की स्थापना का उनका निर्णय एक बड़ी सफलता साबित हुआ। आज सिंगापुर विकास बैंक (डीबीएस) ग्रुप होल्डिंग्स लिमिटेड दक्षिणी-पूर्वी एशियाई क्षेत्र में सबसे बड़ा बैंक है।

श्री ली क्वान यू, जिन्हें *हैरी* भी कहा जाता है, ने शासन के स्व-निर्मित मॉडल का, जिसे 'व्यावहारिक सत्तावाद' का नाम दिया गया, सफलतापूर्वक कार्यान्वयन किया। वैचारिक पूर्व-धारणाओं के बोझ से अलग रहते हुए, उन्होंने सिंगापुर को न केवल एक त्रुटिहीन विकास की ओर अग्रसर बहुसांस्कृतिक समाज के रूप में विकसित किया, बल्कि वे चीनी नेता डेंग जियोपिंग की आर्थिक सुधारों और खुलेपन की नीति के प्रेरणास्रोत भी रहे।

जिस दिन सिंगापुर ने स्वतंत्रता प्राप्त की, उस दिन से लेकर वर्ष 2015 तक, जब 'लॉयन शहर' अपनी 50वीं वर्षगांठ मना रहा है, श्री ली सिंगापुरी राजनीति के केन्द्र में रहे। पीपुल्स ऐक्शन पार्टी के संस्थापक सदस्य, श्री ली ने प्रधान मंत्री के रूप में विकास और सम्पन्नता की दिशा में सिंगापुर का उत्थान सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई; वरिष्ठ मंत्री के रूप में श्री ली ने देश के बहुसांस्कृतिक चरित्र को सुदृढ़ किया और; परामर्शदाता मंत्री के रूप में इन्होंने एशिया तथा एशियाई शक्तियों के उदय में नई प्रेरणा जगाने का प्रयास किया। वास्तव में, 3 जून, 1959 को कार्यभार संभालने

के बाद से श्री ली पच्चीस वर्षों तक सिंगापुर के प्रधान मंत्री रहे तथा इसके बाद इन्होंने वरिष्ठ मंत्री तथा परामर्शदाता मंत्री की जिम्मेदारियां संभाली जो वर्ष 2011 तक जारी रहीं। *द फाइनेंशियल एक्सप्रेस* ने इनके योगदान का उपयुक्त विवरण यह कहते हुए दिया, "ली क्वान यू ने पितृतात्मक तथा उदार सत्तावादी एकल पार्टी राष्ट्र के सिंगापुरी मॉडल को औपचारिक स्वरूप प्रदान किया जो अपने तौर-तरीकों में उदार बना रहा।"

पश्चिमी उदारवादी अक्सर इन पर आरोप लगाते हैं कि इन्होंने लोकतंत्र का गला घोटने की हद तक राष्ट्र के नियंत्रण को सख्त बना दिया। फिर भी, वे अर्थव्यवस्था के मामले में सरकार (सरकारी हस्तक्षेप) को वापस लाने के लिए सराहना के हकदार हैं, क्योंकि अधिकांश उदारवादी वक्तव्य आर्थिक मामलों में सरकार द्वारा हस्तक्षेप न करने की दलील देते हैं।

ली क्वान यू की मौत पर संवेदना प्रकट करते हुए प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने ट्विटर पर लिखा कि श्री ली क्वान यू "एक दूरदृष्टा राजनेता और नेताओं के बीच शेर (की तरह) थे; श्री ली क्वान यू की जीवनी हरेक को एक बहुमूल्य सीख देती है...।" हालांकि श्री ली नेहरू युग के दौरान सिंगापुर की सैन्य क्षमता का निर्माण करने में भारतीय समर्थन नहीं जुटा सके, फिर भी, वे जीवन भर भारत के कट्टर समर्थकों में से एक रहे। विगत वर्षों में, भारत-सिंगापुर संबंध इस हद तक विकसित हुए हैं कि सिंगापुर यकीनन 'एशिया में भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली भागीदार' बन गया है। भारत के साथ मिलकर काम करने की श्री ली की इच्छा को भांपते हुए, 'एशिया के इस सिंगापुरी पुत्र' को भारत की अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी के उनके अंतिम संस्कार में जाने की संभावना है।

अक्सर *एशियाई क्षेत्र के सबसे चतुर राजनीतिज्ञ* के रूप में जाने जाने वाले श्री ली ने लोकतांत्रिक स्वतंत्रता और सत्तावाद के उदार मिश्रण के रूप में बहुसांस्कृतिक और प्रतिभावान (मेरिटोक्रैटिक) समाज के मिले-जुले स्वरूप का निर्माण किया और इस प्रकार आम सिंगापुरी जनता की चिंताओं का समाधान भी किया। विदेश नीति के क्षेत्र में इन्होंने विश्व को सफलतापूर्वक दिखलाया कि चीन और अमरीका जैसी दो महाशक्तियों के साथ संबंधों के मामले में संतुलन कायम रखते हुए उनसे लाभ उठाना संभव है।

सारांशत: वही दोहराया जा सकता है जिसकी ओर इंग्लैण्ड की पूर्व प्रधान मंत्री सुश्री मारग्रेट थैचर ने अपनी पुस्तक '*स्टेटक्रॉफ्ट: स्ट्रैटज़ीज फॉर अ चेंजिंग वर्ल्ड*' में इशारा किया था, "श्री ली ने लगभग

अकेले ही सिंगापुर को वर्तमान समय की सबसे आश्चर्यजनक आर्थिक सफलता की कहानियों में से एक बनाया और उन्होंने ऐसा अपने इस छोटे से राष्ट्र की सुरक्षा और अस्तित्व पर भी लगातार (मंडराते) खतरों का सामना करते हुए किया।" **श्री** ली क्वान यू ने न केवल सिंगापुर की त्रुटिहीन वृद्धि और सतत विकास सुनिश्चित करने में सफल भूमिका निभाई, बल्कि उन्होंने सिंगापुर को चार एशियाई ताक़तों में से एक बना दिया। अनेक एशियाई नेताओं के प्रेरणास्रोत, उन्हें हमेशा एक ऐसे सर्वात्तम एशियाई राजनेता और राष्ट्रनिर्माता के रूप में याद किया जाएगा, जिन्होंने सिंगापुर को तीसरी दुनिया के देशों के समूह से निकाल कर विकसित विश्व का सदस्य बना दिया।

***

**डॉ. राहुल मिश्र विश्व मामलों की भारतीय परिषद में अनुसंधान अध्येता हैं।*